मनुष्य बनो

6/79

मू० ६-००

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़ । उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम	:	श्री श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६ - स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है ।

दिनांक १५ अक्टूबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २९	आषाण सं० २०३६ वि० जून, १९७९	संख्या ९

चेतावनी

बेगम देश हमारा साधो ! बेगम देश हमारा ॥
वेद-पुराण पार नहिं पावें, कहन सुनन से न्यारा ।
जात-पाँत वहां कछू नहीं है, नहिं संध्या नियम अचारा ॥ साधो०
बिन बादल के पानी बरसै, नहिं मीठा नहिं खारा ।
सुन्न महल में नौबत बाजे, किंगरी बीन सितारा ॥ साधो०
औंधा कुआ गगन जल पानी, कोटि अरब विस्तारा ।
बिन नयनन के मोती पोहे, कोटि सूर्य उजियारा ॥ साधो०
जो चल जाय ब्रह्म जहाँ दरसे, आगे अगम अपारा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, कोई जाने गुरुमुख प्यारा ॥ साधो०

=×=

स्तुति और निन्दा

अगर तुम किसी की स्तुति करना चाहते हो, तो गुरु या मालिक की करो और यदि निन्दा ही करनी हो तो अपनी करो। गुरु या मालिक की स्तुति करने से जितनी अच्छी बातें और अच्छे गुण हैं, वह स्वयं आकर्षण के अन्तर्गत तुम्हारी ओर खिचेंगे और तुमको अपना केन्द्र बनाते जावेंगे।

जब तुम अपनी निन्दा करोगे तो जितनी तुम में बुरी बातें व अवगुण हैं वह तुमसे स्वयं दूर होते जावेंगे, तुम जिसको प्यार करते हो उसको अपनी ओर खींचते हो, जिससे घृणा करते हो उसको अपने मे दूर हटाते हो।

गुरु या मालिक सब गुणों का भण्डार है। चूँकि वह मानसिक आदर्श है, इसलिये जितने गुण तुम समझ सकते हो और जिनको नहीं समझ सकते हो, वह सब उनमें है और उनकी प्रशंसा या स्तुति करते रहने से वह तुम्हारी ओर आकर्षित होने लगेंगे।

ठीक इसी प्रकार जब तुम अपने अवगुणों को देखकर उनसे घबड़ाने लगोगे वह तुम्हारा पीछा छोड़ देंगे। लेकिन यहाँ एक बात और है उसको भली भाँति समझ लेनी चाहिए। अगर तुम अपनी निन्दा करते हो तो केवल अपनी बुराइयों की निन्दा करो। अपने आप निज स्वरूप को भूलकर भी निन्दा न करो, नहीं तो हानि उठाओगे। अपनी निन्दा भी इसी कारण अध्यात्म में प्रथम श्रेणी की की जाती है कि हम पवित्र व निर्मल हो जावें और जब हृदय में इतना अनुभव होने लगे कि अब हम में इतनी कमी नहीं हैं, तो अपनी भी निन्दा न करो। केवल मालिक व गुरु की स्तुति से काम रखो। यह क्रम भी उस समय तक रहे जब तक मालिक या गुरु स्वरूप (जात) को तुम अपना आपा न अनुभव करने लग जाओ। जब यह अवस्था आ जायेगी फिर स्तुति भी [illegible] हो जायगी उसकी आवश्यता

शेष न रह जायेगी।

स्तुति व निन्दा का अभिप्राय जिस प्रकार ऊपर वर्णन किया गया है, केवल यह है कि आध्यात्मिक आदर्श की याद आती रहे और साथ ही अपनी त्रुटियों का लेशमात्र आभास भी रहे। अच्छाइयों की याद तुमको दिन-प्रतिदिन अच्छा बनाती जायगी। तुम उनका सच्चे हृदय से आदर करने लगोगे और जहाँ हृदय में नेकी का प्यार आया तुम स्वयं नेक बन जाओगे। गुरु या मालिक मनुष्य को नहीं कहते वह स्वयं सद्गुणों के स्वरूप हैं और केवल मानसिक इष्ट या ध्येय हैं, जो तुम्हारे हृदय व मस्तिष्क में स्थित हैं और धीरे धीरे ध्यान से उनकी पूर्ति भी अपने अन्दर करना है। चुम्बक और लोहे में केवल उस समय तक आकर्ष रहता है जब दोनों एक दूसरे से पृथक रहते हैं, और जहाँ वह खिचकर एक हो गये फिर आकर्षण का क्रम आप ही आप बन्द हो जाता है और आदर्श की पूर्ति हो जाती है। स्तुति व निन्दा का अभिप्राय केवल इतना ही है, इससे अधिक नहीं है।

किन्तु यह स्मरण रहे कि तुमको जिस तरह किसी और की स्तुति करने का विचार न रहे, वैसे ही तुम किसी और की निन्दा भी न करो। वरन् दूसरों की त्रुटियाँ (निबलताएँ) तुम में चिमटने लगेंगी। स्पष्ट शब्दों में उनको यों समझो कि तुम यदि किसी मुख्य व्यक्ति की प्रशंसा करते हो, तो उससे दो प्रकार की त्रुटियाँ प्रगट होंगी। प्रथम तो बिना जाने ही खुशामदी होते जाओगे और यह बात तुमको अधोगति में गिराती जायेगी और एक समय आयेगा जब तुम अपने आदर्श से गिर जाओगे और यह अवगुण व बुराई की बात होगी। दूसरे यह कि कोई व्यक्ति संसार में ऐसा नहीं है जो सर्व रूपेण अच्छा ही हो। यदि उसके प्रशंसा करने की आदत डालोगे तो चूँकि इसमें दोष भी है। भलाई के साथ उसकी बुराई भी तुम्हारे भाग में आती जायगी। हाँ! यह आवश्यक है कि जिस किसी में तम नेकी उसका आदर अवश्य करो।

शर्तिया इलाज

सफेद दाग से दुखी क्यों ?

यदि आप किसी भी प्रकार के सफेद दाग से पीड़ित हो, आपका रोग चाहे कितना भी जटिल एव पुराना क्यों न हो, हमारी कम्पनी की स्पेशल आयुर्वेदिक दवा का सेवन अवश्य करें। इस औषधि के सेवन से सातो प्रकार के महाकुष्ठ शीघ्र ही जड़ से आराम हो जाते हैं। यह औषधि इतना कमाल दिखा रही है कि हजारों रोगी इसका सेवन कर पूरा लाभ उठा रहे हैं तथा धन्यवाद प्रेषित कर रहे हैं। प्रचार हेतु एक फ्रायल दवा मुफ्त भेजी जाती है। आप भी अवश्य सेवन करें।

सफेद बाल काला

यदि आपके बाल सफेद हो गये हों तो हमारी कम्पनी की स्पेशल आयुर्वेदिक तेल का सेवन करें। इस तेल के फुल कोर्स का सेवन करने से आपके बाल अवश्य काले हो जायेंगे। तेल बेफायदा साबित होने पर मूल्य वापिस। मूल्य १ फायल ११) रु० फुल कोर्स ३०) रु०

गुप्त रोग

यदि आपको स्वप्न दोष, शीघ्र पतन, कमजोरी, पेशाब या पैखाना के साथ वीर्य गिरता हो और आपको किसी भी प्रकार के स्त्री पुरुषों के गुप्त रोग सम्बन्धी शिकायत हो तो 'स्पेशल धातु पौष्टिक चूर्ण' का सेवन करें। मूल्य १ फायल १५ रु० एवं फुल कोर्स ४० रु०।

उमा आयुर्वेद भवन (म)
पो० लाल विघा (गया)

॥ मनुष्य बनो ॥

प्रवचन

हुजूर परमदयाल पंडित फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर

दिनांक १८-११-७८

हम दीन अधीन दुखी जीवों को, चिता दिया सतगुरु स्वामी ने।
मन सिंध में डूबने वाले को, तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने॥
मद मोह माया के मारे थे, दुख आपति से दुखियारे थे।
कर दया दृष्टि छुटकारा इनसे, दिला दिया सतगुरु स्वामी ने॥
अज्ञान ने भरमाया बाद में, और करम ने बहकाया था हमें।
सत संगत के वचन से भरम, मिटा दिया सतगुरु स्वामी ने॥
पहले नहीं गुरु गम को जाना, जब आँख खुली तब पहचाना।
निज रूप का दर्शन अपने घर में, करा दिया सतगुरु स्वामी ने॥
तज पिंड कौ पहुँचा ब्रह्मांडा, आगे बढ़ आया सच खंडा।
सतधाम से सत का विमल स्वरूप, दिखा दिया सतगुरु स्वामी ने॥
लख अलख अगम कीगम पाई, जो राधा स्वामी पद की शरनाई।
धुर धाम संत विसराम लोक, पहुंचा दिया सतगुरु स्वामी ने॥
राधा स्वामी राधा स्वामी, राधा स्वामी राधा स्वामी।
राधा स्वामी के नाम का भरम, जता दिया सतगुरु स्वामी ने॥

मैंने यह शब्द सुना। अपनी आत्मा से पूछता हूं कि जो कुछ खा हुआ है क्या यह ठीक है? अगर तू बिना सच्चाई अपने अनुभव के बिना दाता दयाल की वाणी का यश करता दोषी, पापी और गुनाहगार है। मैंने इसे क्या समझा? से सच्च मानता हूँ?

अधीन दुखी जीवों को, चिता दिया सतगुरु स्वामी ने।

आसान शब्द है, मैं अपने आपको दीन समझता था अपने आपको निनाँ (छोटा) समझते हैं कि हम कुछ

नहीं। मेरी यह दशा थी। मेरे साथ गुरु ने क्या किया ! ...
दिया। चिताना क्या था ? मुझे समझ देदी कि अशलियत क्या
है, तू क्या है कहाँ से आया है और तेरा क्या परिणाम है ? इसे
चिताना कहते हैं। मैं क्या चेता हूँ ?

मन सिंध में डूबने वाले को, तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने।

यह ठीक है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीरचन्द तू
कहीं संतों की अनुचित प्रशंसा तो नहीं करता ? यह बात नहीं है।
मैं मन के चक्कर में बैठा था। दाता के चरणों में गया, उन्होंने मेरे
अज्ञान को सम्भाला। जब मेरी समझ में बात नहीं आती थी तो-
यह काम दिया। जब आप लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारी
सहायता करता है और मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास होगया कि
जो कुछ मेरे अन्तर पैदा होता है, असल में यह भी नहीं है। ये
केवल संस्कार suggestions and impressions हैं। जिस
प्रकार किसी ने मेरा नाम सुन लिया उसे विचार मिल गया या मेरी
कोई किताब पढ़ले तो मेरे ध्यान में बैठ गया। उसके अन्दर मेरा
रूप प्रकट होगया और उसका काम करगया लेकिन मैं तो गया
नहीं। मुझे इससे क्या चेतावनी मिली ? कि मेरे अन्दर जो कुछ पैदा
होता है यह कुछ नहीं, केवल संस्कार suggestions and impre-
ssions हैं और विचार है जो मुझे मिला था और मैं उसे सत्
मानता था। जिससे मैं सुखी दुखी होता था। जब उन सि
यह पता लगा मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है
होता। बस ! इस एक विचार ने :—

मन सिंध में डूबने वालों को, तैरा ि

मन सिंध क्या था ? मन रूपी समु
जिसमें हम दुखी सुखी, खुश, नाराज
लग गया कि यह क्या है। वह कुछ भ।

हम दीन
यह तो
मैं क्या सभी

suggestions and impressions थे। इनमें कोई सच्चाई (सतता) नहीं थी। जिस प्रकार लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है लेकिन मैं नहीं होता न ही मुझे पता होता है तो मैं चेतवान हो गया और मन से निकल गया। अभी भवसागर में हूं मगर भव सागर अर्थात मन के विचार मुझे दुखी नहीं करते। मैं इस विचार से इस बाणी को सच्चा मानता हूं।

मन सिंध में डूबने वालों को तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने।

मैं अपने मन के चक्कर में ही दुखी था। कभी राम को ढूढ़ता था, कभी कुछ करता था, कमी कुछ किसी से शत्रुता और किसी से मित्रता। मुझे चिताकर आजाद कर दिया। वह लिखते थे मगर मैं संकेत नहीं समझ सकता था। मुझे समझाने के लिए यह काम दिया था। मैं न गुरु, न महात्मा हूँ और न ही मुझे गुरु बनने की चाह है। मैं तो केवल यह समझना चाहता था कि यह संतमत या राधा स्वामी मत क्या वला है जिसने मेरे पूर्वजों की ऐसी तैसी की हुई है। न राम, न कृष्ण न बेदान्त और न सुफी मत ही छोड़ा है। मैं सोचता था कि मैं कहाँ फस गया। मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा, जो कुछ मिलेगा बता जाऊँगा।

मद मोह माया के मारे थे, दुख आपति से दुखियारे थे।
कर दिया दृष्टि छुटकारा इनसे, दिला दिया सतगुरु स्वामी ने ॥

गुरु की दया दृष्टि होती क्या है ? संसार ने नहीं समझा। मैं स्वयं नहीं समझता था तुम्हें क्या कहूँ। गुरु की दया दृष्टि यह है कि वह मानव की बुद्धि को निश्चयात्मिक बना देता है और उसे किसी बात का पूर्ण विश्वास करा देता है।

जब दया दृष्टि होगई तो निश्चय ही शक्ति मिल गई आदमी में विश्वास की शक्ति आजाती है और वह कब आती है ? जब वह गुरु की संगत में जाकर गुरु की बातों को सुनता, गुनता, सोचता और विचारता है मगर संसारी लोग भवसागर से निकलने के लिए

पास नहीं आते हैं न सन्तों के पास जाते हैं, न तो भवसागर में तरने के लिए जाते हैं। संसारी मोक्ष के लिए नहीं जाते हैं। वे तो कोई बेटा, कोई धन और कोई बीमारी से छुटकारा चाहता है।

अज्ञान ने भरमाया था हमें, और करम ने बहकाया था हमें।
सत संगत के वचन से भरम, मिटा दिया सतगुरु स्वामी ने॥

गुरु क्या करता है? सत्संग देकर भरम मिटाता है। मगर किनके? जो भ्रम मिटाने जाते हैं। क्या संसार भ्रम मिटाने जाता है? वे तो संसार से दुखी हैं। कोई कुछ चाहता है और कोई कुछ चाहता है। यह तो संसार ही ऐसा है।

गुरु का क्या काम हुआ? मैंने राधा स्वामी मत में आकर क्या समझा? कि यह सारा खेल मन का है। मैं मन से कैसे निकला? केवल आप लोगों के अवगुणों के कारण, जिससे मैं सत्संगियों को अपना गुरु मानता हूं, क्योंकि इन अनुभवों ने मेरी आँख खोलदी। इस भेद को परदे में रख कर पंथ, गद्दियाँ और डेरे बन गये और हम गरीबों को अन्धकार में रखकर लूटा गया है। किसी ने ऐसी बात नहीं बताई, जो तो इशारों में बताई। मैं उनका कोई दोष नहीं समझता क्योंकि हम सच्ची बात सुनने के लिए नहीं जाते हैं।

पहले नहीं गुरु गम को जाना, जब आँख खुली तब पहचाना।

मैंने गुरु गम को नहीं जाना। यद्यपि मैं गुरु मत में १९०५ से शामिल था मगर मुझे गुरुमत का भेद नहीं मिलता था। अब तुम लोगों की दया से यह भेद मिला। पहली दया तो दाता दयाल की है, अगर यह काम न देते तो मेरी समझ में न आता। जो गुरु बने हुये हैं जिनकी समझ में है वे भी नहीं बताते है। अगर वे बतायें तो उनको धन नहीं आता जाता है लोग मत्थे नहीं टेकते और डेरे नहीं तनते।

निज रूप का दर्शन अपने घर में, करा दिया सतसुरु स्वामी ने

मुझे पता नहीं कि दाता दयाल का क्या भाव है। मैं अपना अनुभव कहने का हक रखता हूँ जो मैंने समझा है। दाता दयाल के कहने अनुसार कि शिक्षा को बदल जाना, मैंने निज रूप का भाव क्या समझा ? जब तुम लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर जाता है और मैं नही होता तो अब मैं क्या करता हूँ ? मेरे मन के जितने खेल है सब समाप्त हो जाते हैं अर्थात गुर गताः, स्वः महा जनः तपाः सत्यं सब समाप्त हो जाते हैं। सहसदल कंवल त्रिकुटि, सुनः महासुनः अंतर गुफा और सतलोक भी समाप्त हो जाते हैं। मैं इनका साधन नहीं करता। क्यों नही करता ? जो कुछ भी रे अन्तर या किसी के अन्तर दिखाई देता है, ये suggestions and impressions हैं। यद्यपि ये बाहर से कोई भी नहीं जाता। वह उसका अपना ही मन था। अब मन से ऊपर चला जाता हूँ। आगे प्रकाश और शब्द है। प्रकाश में रह कर उस चीज की तलाश करता हूं। जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है, वह मेरा निज रूप है। प्रकाश मेरा निज रूप का एक शरीर है। शब्द निज रूप नहीं है। शब्द उस चीज का गिलाफ है जो शब्द को सुनती है, उसका एक शरीर है। जब वहाँ जाता हूं अर्थात अपने निज रूप में जाता हूं तो शायद ये संत कुछ बन जाते होंगे मगर मेरी बुद्धि नहीं मानती क्योंकि इन निज रूप में मानने वाले महात्माओं का अन्त में क्या परिणाम हुआ। कैसी कैसी बीमारियों से मरे देख लिया। फिर मैंने निज रूप को क्या समझा कि मैं कौन हूं ? मैं कोई भगवान नहीं, हरमतत्व नहीं और न ही कुछ बन गया हूँ। मेरा निज रूप क्या है ? मेरे अन्तर शब्द और प्रकाश के पैदा होने से एक चैतन अवस्था आ जाती है, जिस सुरत कहते हैं जिस जगह से सुरत पैदा होती है वह जगह दायग और कायम है।

शब्द परगट तब धरया नाम।

॥ मनुष्य बनो ॥

शब्द गुपत तव रहा अनाम ॥

जब कोई चीज गति में आयेगी तब शब्द होगा। जब वह परम तत्व गति में आता है तो उस गति से शब्द और रोशनी का पदा होना आवश्यक हैं। उस गति के होने से जो एक चेतनता हमारे अन्तर पैदा होती है और शब्द को सुनती है, वह मैं हूँ। मैं कौन हूँ? प्रकृति के खेल में (rvolution) में मैं एक चैतन का बुलबुला हूँ। इसके अतिरिक्त मेरी कोई और हस्ती नहीं। मैं मालिक को ढूढने निकला था। मालिक नहीं मिला। वह क्या है? वह "वह' अवस्था है जहां मैं नहीं रहता। जो मेरी में प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है जब वह प्रकाश और शब्द को छोड़कर अपनी ओर वापिस होती है तो मैं गुम हो जाता हूं और सब कुछ भूल जाता हूँ, मेरा मस्तिष्क ही फेल हो जाता है फिर जब होश आती है तब हम कह देते हैं कि जिस मालिक को ढूडने निकले थे वह अकाल, अनाम, अरूप और अरंग बेरंग था। मैं नहीं ग्रानता क्योंकि जब वह आप ही गुम होगया तो उसने समझा कि वह अनाम और अकाल है। वह क्या है? किसी को पता नहीं मालिक क्या है? सिवाय इसके कि वह है और एक अंश तत्व है और कुछ कहने का हक नहीं। क्योंकि यही बात कबीर साहिब और स्वामी जी महाराज ने कही है इस बात में अपने आपको गलत नहीं समझता। राधा स्वामी दयाल ने जेठ महीने में कहा है –

जेठ महोना जेठा भारी जीवन हिरदे तपन करारी।
संत दयाल जात हितकारी, भेद कहें वह निजकर भारी ॥

अर्थात असली भेद बताते हैं। क्या बताते है? कि हमारा जो आद है जहाँ थे हम आये हैं या प्रकट हुये है वह क्या है?

नहीं खालिक मखलूक न खिल्कत।
कर्ता कारन काज न दिक्कत ॥

राम रहीम करीम न केशो।
कुछ नहीं कुछ नहीं कुछ नहीं था सो ।।

निरमाध उस अवस्था को कहते हैं जहाँ आदमी सब कुछ भूल जाता है। अन्त में क्या कहा ? अन्तिम अवस्था क्या है ?

नहीं सतनाम न नाम अनामी।

वह क्या अवस्था हुई ? वह अवस्था यह है कि जब आदमी प्रकाश और शब्द को छोड़कर अपनी ओर जाता है वह स्वयं ही नहीं रहता। उसकी अपनी हस्ती समाप्त हो जाती है। इसलिए उन्होंने कहा है कि वह न नाम, न अनामी, न रात, न अलख और न अगम है। वह क्या है ? जिसने समझलिया उसने समझ लिया और चुप हो गया। जिसने नहीं समझा वह टकरें मारता रहे। बेशक गुरुओं के दरवार में फिरता रहे और यही बात कबीर साहिब ने कही है कि यह भी नहीं है और वह भी नहीं है आखिर कहते हैं।

सखिया वा घर सब से न्यारा
जहाँ पूरन पुरुष हमारा।
जपाँ पुरुष तहवाँ कुछ नहीं, कहै कबीर हम जानी।
हमरी सैन लखै जो कोई, पावै पद निरवाना ।।

वह क्या हुआ जहां कुछ नहीं ? अपनी हस्ती ही गुम हो जाती है। प्रकृति में क्या है या प्रकृति क्या है या नहीं, मेरे विचार में शायद यह न कबीर साहिब को पता लगा और न किसी और संत को लगा। मैं नहीं कहता कि उन्हें पता नहीं लगा होगा। मगर क्योंकि उन्होंने माना और कहा है। फिर मैंने क्या समझा ? मैंने समझा कि जीवन क्या है।

लव खुले और वन्द हुये।

हमारे अन्तर जब तक हमारी 'मैं' है, हम इस मैं के चक्कर मे आकर सब कुछ सच मानते हैं। 'मैं से ही कभी बाप, कभी बेटा, कभी स्त्री, कभी पती, जीव ब्रह्म, भक्त साधु ज्ञानी और सन्त बनते

हैं। जब हम प्रकाश में जाते हैं तब ब्रह्म बन जाते हैं और अनुलहक (मैं ईश्वर हूं) को आवाज लगाते हैं। जब शब्द में जाते हैं तो हम अपने आपको शब्द स्वरूप समझने लग जाते हैं। हम असल में क्या है ? मुझे तो पता नहीं लगा। मुझे तो यही पता लगा।

खोजत खोजत खोगये पाया नहीं अन्त।
वृथा निकली खोज, खोज से कुछ नहीं बनता ॥

आखिर मैंने खोज की, मुझे क्या मिला ? मुझे यह मिला कि मैं कौन हूँ ? मैं एक चेतन का बुलबुला हूँ। यह सारी सृष्टि किसी शक्ति के अधीन है। वह बनती और बिगड़ती रहती है। उसका सब खेल है। न उसका अन्त (पता) ईसा मसीह को लगा और न सतों को लगा। सब अपनी अपनी बातें कह कहकर चले गये। आखिर सच्चाई वर्णन करने से न भी टले। वह चेत महीने में लिख गये।

नहीं वहां सत नाम, न नाम न अनामी।

इसका क्या भाव ? कि जब आदमी वहाँ चला जाता है तो अपनी हस्ती को अपने आप में गुम कर लेता है। जब उसे फिर होश आता है तो वह कहता कि भई ! नहीं तो न नाम न अनाम, और न सतनाम है अर्थात वहाँ पर कुछ भी नहीं है। उससे मैंने यह परिणाम निकाला कि मैं कौन हूं ? मैं एक बुलबुला हूं। जिस प्रकार की प्रकृति मेरे शरीर और मस्तिष्क की बनी हुई है वैसा काम करने के लिये मैं विवश हूँ। मेरे बश की बात नहीं। मेरे क्या किसी के बस की बात नहीं। छोटा बड़ा कभी आराम से नहीं बैठेगा। कभी लेटा हुआ पाँव मारेगा, हाथ मारेगा और कभी हर समय खेलता रहेगा। क्यों ? क्योंकि उसकी प्रकृति शरीर में है। वह विवश है जब तुम जवानी में आओगे बेशक तुम शरीर न हिलाओ लेकिन तुम्हारा मन हर समय कुछ न कुछ सोचता रहेगा। कोई समय ऐसा नहीं होगा कि जब तक तुम जीवन में हो, मन में हो और तुम्हारा मन न सोचे बुढ़ापे में तुम्हें सब कुछ भूल जाने को जी चाहता। है

मैंने ऐसा समझा। आज यह शब्द निकला था। मेरे दिल में विचार आया कि तूने क्या समझा ? जो मैंने जीवन समझा वह कह चला:—

तज पिंड को पहुंचा ब्रह्मांडा, आगे बढ़ आया सच्च खंडा।
सतधाम से सत का त्रिमल सरूप, दिखा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥

सतधाम का त्रिमल स्वरूप क्या हुआ ? प्रकाश और शब्द कोई और विमल स्वरूप हो तो मुझे पता नहीं। सफेद रंग की रोशनी और शब्द, यह मेरी समझ में आया है।

लख अलख अगम को गम पाई, ले राधा स्वामी पद की शरण।
धुर धाम संत विश्राम लोक, पहुंचा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥

वह राधास्वामी धाम विश्राम कैसे हुआ ? विश्राम ऐसे हुआ कि अपनी हस्ती हा अपने आपको भूल गई और विश्राम आगया। आप रात को गहरी नींद (घोर निन्द्रा) में सो जाते हो। क्या आप विश्राम नहीं करते ? संसार को भूल जाते हो सारे दिन के काम को भूल जाते हो। इसी प्रकार हम जागते हुये अपने आप को उस अवस्था में लेजा कर विश्राम करते हैं। विश्राम का क्या भाव है ? जहाँ हम सब कुछ भूल जाते हैं। हमारी टाँग कटी हुई है और उसका औपरेशन हुआ है हम गहरी नीद में जाकर भूल जाते हैं कि हमारी टाँग कटी हुई है या नहीं कटी हुई है। मैं विश्राम ऐसा समझता हूं।

राधास्वामी राधा स्वामी, राधा स्वामी राधास्वामी।
राधास्वामी के नाम का मरम, जता दिया सतगुरु स्वामी ने ॥

राधा स्वामी शब्द का जो मरम अर्थात भेद है वह समझा दिया। वह राधा स्वामी क्या है ? जहाँ से मेरा self निकला है ? उसे अकाल, अनामी पुरब और वे नामी समझ लो। वहां गति हुई तो मेरे अन्तर शब्द और चेतनता आगई। अपने आपको उस अवस्था में लेजाने की (STAGE) का नाम राधा स्वामी है। बेशक मुँह से कोई राधा स्वामी मत कहे मगर अपने आपको इतना

ले जाकर अपनी जात में अपने आपको भुला देने की अवस्था का नाम राधास्वामी धाम, या अनामी पद है। अगर इसके अतिरिक्त कुछ और राधा स्वामी हैं तो राधास्वामी मत वालो। मुझे पता नहीं लई। अगर तुम जानते ही तो मुझे समझा दो। मैं हेराफेरी नहीं जानता। मैंने सच्चाई बर्णन करदी। ताकि निजी स्वार्थ, निजी मान और निजी धन के लिए मुझ पर कोई पाप न चढ़े।

अपना भाग जगाओ। भाग टुकड़े को कहते हैं। हमारे मस्तिष्क में खोपड़ी के अन्तर जितने Cells function करते हैं जो आदमी अपने अन्तर साधन करता है उसके सारे Centre खुल जाते हैं। इनका नाम भाग जागना है। लोगों ने भाग जगाने का यह अर्थ समझा हुआ है कि आदमी भागवान (भाग्यशाली) बन जायेगा। अगर तुमने पिछले जनम में दिया हुआ नहीं है तो क्या लोगे। तुम्हें नाम जपने से रुपया नहीं मिलेगा। संसार भूला हुआ है। नाम जपने से तुम्हारा अनुभव, तुम्हारे मन को शान्ति और तुम को अनुभव होगा लेकिन संसार का सुख तुम्हारे कर्म से मिलेगा। इसलिये कर्म किया करो। किसी की सहायता की हुई है तो तुम्हारी सहायता होगी। अगर तुमने किसी की सहायता नहीं की हुई है तो तुम्हारी कहां से होगी। यह तो कलयुग है। लेना देना बना हुआ है। जो देता नहीं उसे कुछ नहीं मिलता मैंने सारा जीवन दिया हुआ है मुझे मिलता है। अपना अनुभव बताता हूँ। जो आदमी परदा रखकर दान लेकर खाता है जबकि उसके पास अपना धन है। साधू लोगों के पास अपना धन होता है फिर भी माँगते फिरते हैं ये दस नम्बर के दोषी हैं और गलती करते हैं। अगर अपने पास धन नहीं है तो हो सकते हो मगर वह भी कुछ समय के लिए पेट भरने ला सरदी से बचने के लिए कपड़ा इकट्ठा नही कर सकते। जो दूसरे दिन के लिए धन इकट्ठा करते हैं वे दोषी हैं।

सब को राधा स्वामी ॥

मुक्ति का अधिकार

लाखों ही मनुष्य कर्म धर्म करते हैं। लाखों ही जप तप ही में जीवन व्यतीत कर देते हैं। कितने पूजा पाठ में रात दिन लगे रहते हैं। तीर्थ व्रत करने वालों का तो ठिकाना ही नहीं है। क्या यह सब के सब मुक्ति के अधिकारी हैं? जी नहीं! आप भूल कर ऐसा न सोचियेगा।

क्यों? क्या इनका कर्म निष्फल जायेगा? नहीं कर्म का फल तो अवश्य ही मिलेगा।

यदि कर्म का फल मिलता है तो इनको मुक्ति अवश्य ही मिलनी चाहिये।

परन्तु इसका क्या प्रमाण है कि मुक्ति ही के लिए कर्म धर्म करते हैं।

देखने में तो ऐसा ही प्रतीत होता है। यह लोग अन समझ तो हैं नहीं। इनमें बुद्धि, विचार और समझ बूझ है। इनका काम विवेक के साथ होता है।

नहीं! यह बात नहीं है इनके अनेक भाव हैं।

(१) यह लोग बड़ाई के लिए कर्म धर्म करते हैं।

(२) इनका काम दिखावे के लिये होता है जिससे जो लोग देखें इनको अच्छा समझें।

(३) लौक लाज के भय से यह डण्ड कमण्डल ग्रहण किये हुए हैं।

(४) इनको अपने इष्ट पर दृढ़ विश्वास नहीं है।

(५) बहुतों ने धर्म को भी जीवका बना रक्खा है।

(६) बहुत से लोग सैर सपाटे के लिए तीर्थ यात्रा करते हैं।

(७) स्वाभाविक भी नित्य नियम का पालन होता है। इत्यादि इत्यादि.....

जो जिस भाव से काम करता है उसको वैसा फल मिलता है। इनमें ऐसे लोग कम हैं, जो मुमुक्ष हों और मुक्ति के लिए काम करते हों।

कोई दृष्टान्त दीजिए तब बात समझ में आये।

अच्छा! सुनिये:—

दृष्टान्त (१)—कुम्भ का मेला था लाखों मनुष्य हरद्वार नहाने गये हुए थे। गंगा के तट पर बहुत भीड़ भाड़ थी शिव भगवान पार्वती को साथ लेकर कौतुक देखने आये। पार्वती सीधी साधी और भोली भाली स्त्री! शिवजी से कहने लगीं, 'क्या यह सब के सब मुक्त हो जायेंगे?' शिव जी बोले, "कौन ऐसा कहता है?" पार्वती जी ने कहा, 'यह श्री गंगाजी के भक्त हैं गंगा में स्नान करने से इनके पाप कट जायेंगे और मुक्ति गत को प्राप्त हो जायेंगे।' शिव भगवान मुस्कराये:—

१—तीरथ व्रत कर जग मुआ, ठण्डे पानी नहाय।
सत्त नाम जाने बिना, काल जुगन जुग खाय॥१॥
२—तीरथ चाले दो जना, चित चंचल मन चोर।
एको पाप न ऊतरा, लाये दस मन और॥२॥
३—न्हाये धोवे क्या हुआ! जो मन मैल समाय।
मीन सदा जल में रहे, धोये बास न जाय॥३॥
४—कोटि कोटि तीरथ करै, कोटि कोटि करै धाम।
गंगाजल साध न सेवई, तब लग काँचा काम। ४॥

ऐ पार्वती! इन सब में विश्वास और श्रद्धा नहीं है। कोई विरला विश्वासी और श्रद्धालू होता है। पार्वती जी बोलीं, "जगपति! मेरी समझ में नहीं आता कि यह लोग बिना श्रद्धा भाव के यहां आये होंगे।" शिव जी ने उत्तर दिया, 'परीक्षा करलो! मैं मृतक बन जाता हूं। तुम इन लोगों से कहो कि जिसने कभी पाप न किया हो वह मेरे पति का अन्तिम संस्कार करे।"

पार्वती जी ने मान लिया और सड़क पर शव (लाश) को रखकर रोने लगीं। लोगों ने देखा कि एक रूपवती स्त्री अपने बूढ़े पति के लोथ को लिए हुये विलाप कर रही है अनगिनत मनुष्य टूट पड़े और समझाने लगे, 'माई! जो होना था हो गया। अब रोना पीटना व्यर्थ है। तू आज्ञा दे तो हम दाह कर्म कर दें।" पार्वती ने कहा, "सुनो! मेरे पति को केवल वह मनुष्य हाथ लगाये जिसने कभीं पाप कर्म न किया हो।" यह सुनना कि एक एक करके लोग खसक गये। भीड़ छट गई। जो लोग देखने आये थे पार्वतीजी का प्रण सुनकर हट जाते थे। थोड़ा सा और दिन रह गया था। वह वैसे ही बैठी रहीं। अन्त में एक नवयुवक उधर आ निकला। उसने कहा, माई मुझे आज्ञा दे कि मैं इनका मृतक संस्कार कर दूँ।" 'माई बोली, "हाँ बेटे! मैं भी तो यही चाहती हूं परन्तु मेरा प्रण यह है कि इस शव को केवल वही हाथ लगाये जिसमें पाप न हों।" इसने पूछा, 'बस यही बात है?" पार्वती ने कहा, "हाँ!" यह हँसा, 'यह कौनसी कठिन बात है। यह कहकर गंगा की बहती हुई धारा में कूद पड़ा—

गंगे! गंगे! शुद्ध तरंगे! तू अमृत की धारा।
पाप काट अपराध छुड़ावै, खोलै मुक्ति दुवारा॥

वह डुबकी मारकर आया और कहने लगा, "ले माई! मैं पापी नहीं हूँ! अब मुझे आज्ञा दे कि मैं दाह कर्म दिन डूबने से पहिले ही कर दूँ।" उसी समय शिव भगवान उठ खड़े हुये। दोनों ने उस युवक के सर पर हाथ रक्खा और आशीर्वाद देकर कहा, "इन करोड़ों मनुष्यों में एक केवल तू ही ऐसा मनुष्य है जिस को गंगा की पवित्रता पर विश्वास है। तू निस्सन्देह मुक्त जीव है। फिर भोलानाथ पार्वती जी से बोले, "देखा! लाखों और करोड़ों की भीड़ में एक यही नवयुवक मिला जो विश्वास वाला और श्रद्धालू है।" पार्वती जी चुप होगईं।

दृष्टान्त (२)—बनारस में **स्वामी शंकराचार्य** का मठ गंगा के दूसरे किनारे पर था और इनके शिष्य इस किनारे पर थे। गंगा बढ़ी हुई थी आप ने शिष्यों को पुकारा, "मेरी धोती दे जाओ।" चेले बगल झाँकने लगे। बढ़ी हुई गंगा में कौन जान दे! एक एक करके सब ने इन्कार कर दिया। केवल एक चेला रह गया। उसने गुरु की धोती को सर से बाँध लिया और साथियों से कहा, "जब हम गुरु की अपार दया से भवसागर को पार कर जाते हैं तो यह नदी उसके सामने क्या वस्तु है? गुरु यदि उचित समझेंगे आप रक्षा करेंगे।" यह कहा और धम से गंगा में कूद पड़ा। देखते देखते दूसरे किनारे पर जा पहुंचा! पुस्तकों में लिखा है कि गंगा जी उसके पांव तले पद्म अर्थात कँवल के पत्ते बिछाती गईं और इस लिए शंकराचार्य ने उनका नाम **पद्मपाद** रक्खा। यह तो कथा है परन्तु सच्ची बात यह है कि **पद्मपाद** जी गुरु निष्ठ थे।

गुरु समरथ सर पर खड़े, काह कमी तोहि दास।
ऋद्धि सिद्ध सेवा करें, मुक्ति न छाँड़े पास॥
दास दुखी तो मैं दुखी, आदि अन्त तिहुं काल।
पलक एक में प्रगट ह्वै, छिन में करूँ निहाल॥
गुरु को सर पर राखिये, चलिये आज्ञा माँह।
कहैं कबीर ता दास को तीनहुलोक भय नाँह॥

जो लोग दिखावे की भक्ति करते हैं उनको मुक्ति क्या मिलेगी? जैसा भाव वैसा फल।

सर्व जगत को रीति, प्रीति कछु हरि सों नाहीं।
जिनकी मति है भंग, भर्म के संग रहाहीं॥
कहै **पाप** इनका संग तज, जिन प्रभु जाना दूर।
मूरख मर्म न जानहीं सर्व रहा भरपूर॥

साखी

जब लग सुरत निरत नहिं थीरथ, तब लग ना परतीत।
कहें पाँप मैं ताहि न परसूँ, जाके जगत की रीति॥

—×—

एक दृष्टांत तो यह हुआ जिससे पता लगता है कि मुक्ति के अधिकारी बहुत ही कम लोग हैं। साधारण मनुष्यों की पूजा पाठ पर न जाओ। वह तो इसी संसार को सब कुछ समझ रहे हैं। इससे अलग नहीं होना चाहते इसके दृष्टान्त को भी सुनो:—

दृष्टान्त (३)—नारद को एक बार संसारियों की दुर्दशा देखकर दया आई। सोचने लगे, "क्या ही अच्छा होता यदि यह सब बैकुण्ठ को जाते।" घूमते फिरते आप बैकुण्ठ धाम में पहुंचे देखा कि सारा बैकुण्ड उजाड़ पड़ा हुआ है। आपने विष्णु भगवान से कहा, "बड़े शोक की बात है कि बैकुण्ट इस प्रकार सूना पड़ा रहे!' वह बोले "मैं क्या करूँ? कोई यहाँ आना ही नहीं चाहता।" नारद जी हँसे, कोई न कोई बात अवश्य है।"

"यहाँ तो सुख ही सुख है। दुख का नाम भी नहीं है। यदि संसारी जीव यहां आ जाते तो बड़े सुखी होते।" विष्णु भगवान ने कहा, 'बात कोई भी नहीं है। यहां आने की किसी को इच्छा ही नहीं होती मैं भी अकेला हूँ। यदि लोग आजाते तो और नहीं तो गप शप का आनन्द रहता।" नारद जी बोले, आपकी आज्ञा की देर है सब सर के बल दौड़ते हुये आवेंगे। उनका यत्न ही बैकुण्ठ के लिए होता रहता है विष्णु ने समझाया, "वह केवल दिखाने की बात है। वास्तव में कोई भी आना नहीं चाहता। यदि तुम नहीं मानते तो जाओ। स्वर्ग का द्वार खुला हुआ है। जितने लोग आना चाहें उनको अपने साथ लाओ।" नारद मन में बहुत ही प्रसन्न हुये और दौड़ते हुये मृत्यु लोक में आये। सब से पहिले एक बूढ़ा

ब्राह्मण मिला जिसने बहुत लम्बा चौड़ा तिलक लगा रखा था और हाथ में सुमिरिनी लिये हुये 'राम' 'राम' कह रहा था नारद ने सोचा यह धर्मात्मा मनुष्य है और बूढ़ा है, चलो इससे कहें। उन्होंने उसे प्रणाम करके कहा, "बाबा! बैकुण्ठ चलोगे?" वह बिगड़ खड़ा हुआ ओर क्रोध के साथ बोला बैकुण्ठ जाये तू जिसके न आगे नाथ न पीछे पगहा। मैं क्यों जाऊँ! मेरे तो बेटे पोते नाती निवासे सब कुछ हैं अभी मेरी स्त्री जीती है। मालिक का दिया हुआ धन द्रव्य माल असबाब सब कुछ है। जा! अपनी राह ले। किसी निखट्टू से बात चीत कर। नारद लज्जित होकर पानी पानी हो गये। कुछ दूर आगे जाने पर एक नवयुवक मिला। उससे पूछा "क्यों जी! बैकुण्ठ को चलोगे?" वह बोला, "हमारे लिए बैकुण्ठ में धरा क्या है? बैकुण्ठ तो बूढ़ों के लिये है जिनके न पेट में आँत हैं न मुँह में दाँत हैं। यह उन अनाहिजों के लिए है जिनसे कुछ काम काज नहीं हो सकता और बैठे बैठे माल उड़ाना चाहते हैं। मैं स्वर्ग को दूर ही से नमस्कार करता हूं।"

अब नारद को विश्वास हो गया कि भगवान सच कहते थे। कुछ दूर चलकर एक बनिता को देखा जो भक्त जो के नाम से प्रसिद्ध था। सोचा--यदि और नहीं जाते तो न सही। यह विष्णु का प्रेमी है। यह अवश्य जायेगा। यदि यही चला चले तब भी हमारी बात रह जायेगी। इससे भी वही प्रश्न किया। वह बोला, 'आहा! आप नारद हैं, भगवान के प्रेमी भक्त! आइये कुछ भोजन कर लीजिये।" नारद ने कहा. "भोजन पीछे करेंगे, पहिले मेरी बात का उत्तर दो।" वह बोला, "भगवान्। बात तो आपने अच्छी कही, बावन तोला पाव रत्ती। मेरे मन भी लगती है परन्तु लड़का सयाना हो जाये और दुकान का काम काज सम्भाल ले तब मैं चलूँ। अभी पोता हुआ है उसका भी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

व्याह करना है। इन सब से छुट्टी पाकर तब चलूँगा।" नारद जी मन ही मन कहने लगे—"एक मनुष्य भी बैकुण्ठ चलने के लिये नही मिलता, चलो पशुओं को देखें, वह महा दुखी हैं। सम्भव है यह वहाँ चलना स्वीकार करें।" एक सूअर इधर उधर मुँह मार रहा था। उससे पूछा, "तू बैकुण्ठ चलेगा ?" वह बोला, पहिले यह तो बताओ कि वहाँ विष्ठा होती है या नहीं ?" नारद जी ने उत्तर दिया, "स्वर्ग में विष्ठा का क्या काम !" तब सूअर ने कहा, "चलो, चलो, अपना काम काज देखो। मुझे ऐसा बैकुण्ठ नहीं चाहिये जहाँ विष्ठा न हो।" नारद की कुछ न पूछिये। ऐसे लज्जित हुये कि फिर वहां ठहर न सके।

अन्त में झक मार कर उसी बनिया भक्त के पास पहुँचे, और सोचा कि वह चलने के लिए तैयार ही था, समझाने बुझाने से सम्भव है साथ ही चले। अब उसका लड़का घर का सब काम काज करता था और पोते का विवाह भी हो चुका था। नारद ने उससे कहा, 'अब तो बैकुण्ठ को चलो।' वह बोला, "जल्दी क्या पड़ी है ? चलना तो आवश्यक हैं परन्तु घर बार का कुछ प्रबन्ध ठीक करलें तब चलेंगे।" नारद बेचारे उलटे पाँव फिरे। कई वर्ष पीछे फिर उसके पास गये। लड़के ने कहा, "बाप तो मर गये।" नारद ने दिव्य दृष्टि से देखा तो वह कुत्ता बनकर द्वार पर बैठा हुआ था। उसके कान में झुक कर कहा, "कहो ! अब भी चलोगे या नहीं ?" कुत्ता बोला, "लड़का अनसमझ और मूर्ख है। उसे अभी व्यवहार करना नहीं आता। वह घर का सारा धन द्रव्य उड़ा देगा। मैं बैठा हुआ उसकी देख भाल करता हूँ नहीं तोर सारा माल असबाब लूट ले जायेंगे।"

नारद ने उसे कितना समझाया परन्तु वह जाने के लिए तैयार नहीं हुआ। तब नारद ने जाकर विष्णु भगवान से कहा, वास्तव में महाराज ! कोई यहां आना नहीं चाहता। आप सच

कहते ये। मैंने बर्षों चक्कर लगाये परन्तु किसी ने भी आना स्वीकार नहीं किया।"

यह संसार की दशा है। कोई क्यों किसी से उलझे! चलने दो सबको अपनी अपनी राह पर। तुम दुनियाँ के ठेकेदार बनकर किसी से न अटको। जो होना हैं होने दो।

=+=

प्रवचन

हजूर परमदयाल पंडित फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर दिनांक १६-६-७८

राधा स्वामी!

मैं यह काम करता हूं। मैं महसूस करता हूं कि यह काम क्यों करता हूं? हर आदमी को कोई न कोई खनत है, मनिया है। कोई धन, कोई स्त्री, कोई भाव और कोई और किसी इच्छा में फिरता है। मुझे होश आई। मैं हिन्दू हूँ। मुझे भगवान को मिलने का विचार पैदा हुआ। मैं ब्राह्मण के घर पैदा हुआ। मैं सनातन धर्म को मानता हूँ। मैं राम, कृष्ण, देवी देबता को पूजता और मत्था टेकता था। जैसा कि पहले भी कहा करता हूँ, मेरा भाग्य मुझे संतमत में ले आया। जब मैंने संतों, कबीर साहिब राधा स्वामी मत की वाणियें पढ़ी तो उनमें उस भगवान को जिसको हम पूजते हैं, काल कहा है संतमत में संसार के पैदा करने वाले को काल, जालम और निर्दई कहते हैं। वे उस ईश्वर, परमात्मा को नहीं पूजते जिसने संसार बनाया है। दाता दयाल जी महाराज से मेरा विश्वास नहीं टूटता था और न ही मुझे यह समझ आती थी कि

संतों का खुदा (मालिक) कौनसा है। मैंने इस बात को समझने के लिये सारा जीवन व्यतीत कर दिया कि क्या इस संसार को बनाने वाला ठीक जालम है? क्या इससे परे कोई और मालिक है, जहाँ हम जायें? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। दाता दयाल ने कहा था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तुम्हें बिश्वास है कि इस संसार को पैदा करने वाला जालम है? हाँ विश्वास है।

कैसे विश्वास आया? यह बाग लगा हुआ है इसमें वृक्ष लगे हुये हैं। वृक्षों पर टेहनियों को पत्ते लगे हुये है। पत्तों को कीड़े खाते हैं। क्या पत्तों में जान है या कि नहीं? बिज्ञान सिद्ध करता है कि इन पत्तों मैं जान है। एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खाता है, दूसरा तीसरे को खाता है। पक्षी कीड़ों को खाते हैं। पक्षियों को कोई और चीज खाती है। जानवरों को शेर भेड़िए, चीते खाते हैं। मैं सोचता हूँ, छोटे छोटे कीड़े मरते हैं। एक दूसरे को खाते हैं। हमारे शरीर के अन्दर करोड़ों कीड़े (Jerms) पलते हैं अन्तर ही बच्चे पैदा करते हैं। जब कीड़ें (Jerms) अधिक बढ़ जाते हैं, तो दूसरे (Jerms) उनको खाते हैं। मलेरिया के जर्मज (Jerms) होते हैं। हम दवाई देकर उन्हें मारते हैं। शास्त्र कहते हैं कि ईश्वर ने हमें अपने रूप पर बनाया है। संतों की शिक्षा अनुसार जो असली मालिक है, उसने संसार को पैदा नहीं किया। काल ने पैदा किया है। यह तो मुझे विश्वास होगया। हम कितना जुलम करते हैं। हम अपने स्वाद के लिये बच्चे पैदा करते हैं जो बच्चे पैदा होंगे, उनके साथ क्या होगा, टी०बी० होगी, कैंसर होगा, या क्या होगा, क्या किसी को पता है? यह आषाड़ का महीना है। वहाँ क्या लिखा हुआ है:—

प्रथम आषाढ़ मास जग छाया।
आसा घर जिव गर्भ समाया॥

छोटे बच्चों को बीमारी कुछ होती है और माँ बाप कुछ और इलाज करते हैं। बच्चा न बोल सकता है और न कह सकता है फिर भी बीमार होता है। उसे टीके लगते हैं और वह रोता है। फिर वह बच्चा खेलना चाहता है लेकिन माँ बाप उसे बल पूर्वक पढ़ाते हैं। अगर वह उनके कहे नहीं लगता तो माता उसे मारती है जब वह बड़ा हो जाता है तो उसके मन में तरंगें उठती हैं, जवानी आती है और कई खराबियाँ करता हैं। विवाह होकर स्त्री के साथ आनन्द लेता है। बच्चे पैदा करता है। लड़के लड़कियाँ हो जाती है। फिर उनकी सन्तान की चिन्ता होती है। उनके विवाह करो, मेरे पास ऐसे कई केश Case हैं। मैं भी तुम्हारा जैसा गृहस्थीहूं। लड़कियों के लिए घर नहीं मिलते। लड़के लड़किएँ बदमाश हो जाती हैं। हम दुखी होते हैं + यह संसार क्या है? हम पर ऐसा माया का छापा पड़ा हुआ है कि हम दुखी भी होते हैं। रोते भी हैं, पीटते भी हैं लेकिन फिर भी इस संसार को छोड़ने के लिए तैयार नहीं। स्त्री काम के वश में हमें जूते भी मारती है, बुरा बर्ताव भी करती है लेकिन फिर भी हम उसके पीछे पीछे फिरते हैं। वह तो अपनी स्त्री को तंग करता है, कई कष्ट देता है फिर भी स्त्री उसके पीछे पीछे फिरती है। यह संसार क्या है? यह काल और माया संसार है मगर इसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। मैंने ध्यान किया और सोचा।

सन्तों ने इससे बचने की युक्ति बताई ताकि हम सदा के लिए इस झगड़े से बच जायें। सन्तों का मार्ग केवल इस संसार के दुखों से बचने के लिए है। यह सन्तमत न समाजवाद है और न राजनीति है। कई वार मैं चकित होता हूं कि जिन सन्तों ने यह इलाज निकाला हैं वे बहुत दुखी हुये। बड़े बड़े सन्त बीमार हुए। कोई टी०बी० कोई कैंसर से मरा। किसी के साथ मुकदमा हुआ। यह संसार दुखों की खान है क्योंकि मुझे यह विचार मिला था कि मालिक

एक ऐसी जगह है जहाँ से हम फिर नहीं और हमारे दुखों की समाप्ती हो जायेगी। पता नही जिन सन्तों ने यह शिक्षा निकाली है वे आवागमन से बचे या कि नहीं। इसका हमारे पास कोई प्रमाण नही। सुनी सुनाई बात कहते हैं। कई बड़े बड़े सन्त कहते हैंकि भई मैं फिर आऊँगा। अगर भई ! आपने सन्त बनकर फिर आना है तो जो कुछ आपने संसार को बताया वह गलत है। इसी समझ को प्राप्त करने में मेरा जीवन समाप्त हो गया। अन्त में बानवे साल का होगया मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। सन्तों ने अपनी वाणियों में काल के निर्दयी होने के बारे में कहा है।

मैं हर समय अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीरचन्द ! तू ने यह मकड़ी का जाला बना लिया। लोगों को उपदेश करना है, पहले तू बता कि तेरे पास कोई प्रमाण है कि क्या तू वापिस फिर इस चक्कर में नहीं आयेगा, या अभ्यास करने या नाम जपने से तू स्वयं दुखों से बच गया ? क्या मेरे पेट में दर्द नहीं होती ? किसी समय पेशाब का कष्ट है किसी समय कोई कष्ट है। मैं सोचता हूं कि यह संसार क्या है ? क्या इससे बचने की कोई युक्ति है ? वह युक्ति मुझे दाता दयाल समझाते थे मगर मेरी समझ में नहीं आता था। मुझे उस युक्ति का पता तुम लोगों से लगा कैसे ? सत्संगी लोग कहते हैं कि मेरा रूप उनकी सहायता करता है मगर मैं नहीं होता और न ही कही जाता हूं न मुझे पता है यह बिलकुल सच्ची बात हैं। जो कुछ मैं कहता हूं अगर इसी प्रकार दूसरे गुरु भी नहीं जाते न सहायता करते हैं तो मैं उत्साहपूर्वक कहता हूँ कि इन सन्तों, धर्मो और पंथों ने अपने निजी स्वार्थ के लिये मानव जाति के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया और धोखा दिया है। क्योंकि हमें पता है वाणी कहती है गुर के पास जाओ, वह तुम्हें पता देगा जो कुछ तुम्हारे साथ होता है यह सब बकवास ये झूठ है। जीवों को गलत विचार दिये गये हैं गलत समझ दी

गई है। एक सन्त सावनसिंह जी को जब लोग तंग किया करते थे तो उन्हें क्रोध आता था और वह सत्संगियों को सोटी से मारा करते थे। सत्संगी समझते थे कि उनके पाप कट गये। क्योंकि मेरे जिम्मे शिक्षा को बदलने की आज्ञा थी इसलिये मैंने सच्चाई वर्णन करदी।

मैं टाँडे गया था। वहां डाक्टर जगजीतसिंह जो Finence Minister था। उसने मुझे सत्संग के लिए बुलाया था मेरी फोटो के साथ इश्तहार भी दिया। उसने मुझे क्यों बुलाया? केवल इस लिए कि वह यहाँ से लन्दन गया था और वहाँ से उसने मुझे लिखा कि मैं लन्दन में प्रातः साढ़े चार बजे उसके कमरे में चला गया और मैंने उसे बहुत कुछ कहा और यह भी कहा कि बैसाखी आ रही है तुमने कुछ सहायता नहीं की, उसने अपनी स्त्री को लिखा। वह यहां आकर रुपये दे गई। फिर वह केनेडा में था। बहुत ठन्ड पड़ रहीं थी। वह हैलीकोप्टर में जा रहा था कि बर्फानी तूफान में घिर गया, कोई ठिकाना न रहा। वह कहता है कि रोशनी के मण्डल में (फकीरचन्द) प्रकट हुआ। मेरे साथ बातें की और फिर मैं उसे Realindans के पास ले गया। मैंने उसे कहा कि दो घन्टे यहाँ ठहरो फिर दूसरा जहाज आयेगा वह ले जायेगा जैसा कि उसने बैसाखी के सत्संग में जो कहा था। मैं तो गया नहीं। फिर क्या सिद्ध हुआ? कि अगर यह ठीक है कि ये महात्मा भी नहीं जाते और हमें परदे में रखकर मूर्ख बनाया और लुटा है तो ऐ भारतवर्ष के धार्मिक और पार्थक संसार वालो! तुम सोच लो कि ये कहाँ तक सच्चे हैं। इसलिए में राधा स्वामी मत, कबीर मत या सन्तों के मत को सच्चा मानने के लिए विवश हो गया। अगर आज मुझे यह सचाई न मिलती तो शायद मैं पहला आदमी होता जो कबीर राधा स्वामीमत या नानक मत के विरुद्ध आवाज दे जाता चाहे गलो मुझे कुछ भी कहते। मैं कभी नहीं डरता। यह वह भेद है

जिसे कबीर ने भी छुपाया। उसने धर्मदास को भेद बनाकर कह दिया।

धर्मदास तोहे लाख दुहाई।
सार भेद नहीं बाहर जाई॥

मगर मैं सोचता हूं कि अगर तू ने इस भेद को खोल दिया तो बन गया? क्या तुम लोग सुधर गये? नहीं लोग मुझे अपने घर ले जाते हैं। जालन्धर के एक आदमी के लड़के का ब्याह हुआ था वह कहता कि मेरे घर चलो। मैं हँसा मैंने कहा, फकीरों का क्या काम। हम लोग तो इस संसार के पैदा करने वालों को जालम समझते हैं और अगर हम विवाहों में जाते हैं तो हम दोषी हैं। कुछ हम शिक्षा देते हैं उसके हम विरुद्ध जाते हैं।

मेरी पिछली आयु है पता नहीं मेरे पास क्या हो मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। मैंने जो कुछ समझा, वह कहता हूँ। स्वामी जी कहते हैं:—

काल ने जग भरमाया।

काल Creator को कहते हैं। जिसने संसार बनाया है और रचा है। सन्त इस संसार के रचने वाले की पूजा नहीं करते बल्कि स्वामी ने यहाँ तक लिख दिया कि सन्त, ईश्वर और परमेश्वर के पैदा करने वाले होते हैं। ऐसी ऐसी वाणियें सुनकर हम लोग सन्तों के पीछे फिरते हैं। मैं बहुत फिरा हूँ। आपने क्या फिरना है आप तो मेरे पास माँगने के लिए आते हो। मैं सब कुछ देने के लिये जाया करता था। केवल यह जानने के लिए कि सचाई क्या है और वह असली मालिक कहाँ है जिस से मिलकर हम सदा के लिए इस काल के चक्कर से बच जायें। काल के चक्कर से बचने का क्या भाव है? हमारा मन काल है। यही वासना इच्छा, आस और रचना करता है। इच्छा के बिना न तो तुम रह सकते हो और न मैं रह सकता हूँ, न सन्त रह सकते हैं। अगर

सन्तों ने डेरे बनाये तो वे भी काल में ही हैं। मैंने मानवता मंदिर बनाया, यह कालमत नहीं तो क्या यह दयालमत है? इस संसार में रहते हुए इस चक्कर से बचना महा कठिन है। अगर हम बचना भी चाहें तो दूसरे नहीं बचने देते, मेरी लड़की के कोई बच्चा नहीं। जब कमी वह आती है तो मैं कहा करता हूं बेटी! तू बड़ी भाग्यशाली है, पाप करने से बच गई अगर बच्चा पैदा करेगी तो पता नहीं उसके साथ क्या होगा? मगर वह दुखी है। सन्तों का मार्ग सर्व साधारण के लिए नहीं है। जिन्हें सन्तान चाहिए और इस झगड़े में पड़ना चाहते हैं उनके लिए न सन्तों का मार्ग है और न कभी होगा! हम गुरु लोगों के सारे संसार को सन्तमत की शिक्षा देते हैं लेकिन असल में हम स्वयं कालमत में चलते हैं और लोगों को यह बताते हैं कि हम दाता दयाल के पैरोकार हैं।

काल ने जगत अजब भरमाया।
मैं क्या दया करूँ बखान॥

यह स्वामी जी की बाणी है। क्या इसमें झूठ लिखा है? बिल कुल ठीक है। काल हमारा मन creater हैं। हम अपने संकल्प से अथवा संसार बनाते हैं। ईश्वर अपने संकल्प से संसार को बनाता है। हम सब भ्रम में हैं। आज तुम्हारे अन्दर मेरा रूप राम कृष्ण या किसी और का रूप प्रकट होगया, आपने उसे सच समझा। फिर आप फकीरचन्द या किसी और के पास गये जिस का रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट हुआ। उसे रुपये दिये और नाक रगड़े यह जानकर कि गुरु महाराज मेरा अमुक काम कर गये। टाँडे में एक स्त्री आई, जिसके हाथ में सौ रुपये का नोट था। उसने मेरी गोद में बच्चा डाल कर कहा कि बाबा जी! यह आपका प्रसाद है। मेरे कोई लड़का नहीं था। आपके पास गई थी, आपने प्रसाद दिया था। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं अरे बूढ़े! मर जावेगा।

क्या किसी ने तेरे साथ जाना है ? तथा तेरे प्रसाद से बच्चा हुआ। अगर मेरे प्रसाद से बच्चा हो सकता है तो मेरी लड़की के भी हो सकता है। स्वामी जी ठीक कहते कि उस मन ने हमें भरमाया हुआ है। बात कुछ और है और हम समझते कुछ हैं। इसका क्या परिणाम है ? हमें खुशी भी मिलती है और दुख सुख भी मिलता है।

यह काम मैं जो कर रहा हूँ, आप पर कोई उपकार नहीं करता यह मेरा अपना कर्म भोग है। इस काल ने मुझे भी बुरी तरह भरमाया हुआ है। जितने आदमी मेरे पास आते हैं क्या कोई परमार्थ की बात करता है ? कोई कहता है धाटा पड़ा हुआ हैं। किसी की लड़की का विवाह नहीं होता, कोई पूछता है B.Sc. कराऊँ या M.Sc. यही कबीर साहिब ने नीचे शब्द में कहा है। मैं जानता हूँ कि मैं ऊँचा बोल रहा हूं। आप लोग मेरी बात को सुनना पसन्द नहीं करेंगे क्योंकि आपको आपके मन ने भरमाया हुआ है। तुम्हें सचाई की ओर नहीं जाने देता। कई बीमार आदमी मुझ से प्रशाद ले जाते हैं बे स्वस्थ हो जाते हैं। वे समझते हैं कि उन्हें बाबे है स्वस्थ किया। अगर मैं स्वस्थ करने वाला होता तो डाक्टरों के पास क्यों जाता। ऐसी दशा को देखकर मेरा मस्तिष्क Puggle हो गया। मैं किसी ऐसी जगह जाना चाहता हूँ जहाँ फिर जन्म न हो और वापिस न आऊँ, जब विचार आता हैं कि फिर जन्म होगा तो जान काँपती है दस महीने किसी के पेट में सिर नीचे और टाँगे ऊपर रहेंगी। फिर जिस प्रकार मेरा बाप कठोर हृदय था, मुझे मारता था वैसा और काई बाप मिल जायेगा जो मुझे मारेगा। स्त्री ऐसी मिलेगी जो मेरी जान खायेगी। यह संसार क्या है ? कुछ नहीं, विपत्ति का कारण है।

ऐसी दिवानी दुनिया भक्ति भाव नहीं बूझै जी।
कोई आवे तो बेटा मांगे, यही गुसाईं दीजै जीं ।।

कोई आवे दुख का मारा, हम पर किरपा कीजै जी।
कोई आवे तो दौलत माँगे, भेंट रुपैया लीजै जी॥
कोई करावे व्याह सगाई, सुनत गुसाई रीझे जी।
साँचे का कोई गाहक नाहीं, झूठे जक्त पतीजै जी॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अन्धों को क्या कीजै जी॥

एक फिरका वाले कहते हैं माँस खाओ और शराब पीओ बेशक दूसरों की स्त्रियों को लिए फिरो। उनके करोड़हा आदमी चेले हैं। उनके पास इतना रुपया आता है जिसका कोई हिसाब नहीं। सच्चे आदमी को कोई नहीं पूछता कि तू कौन है। यह काल की रचना है। तभी तो कबीर साहिब कहते हैं।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, अन्धों को क्या कीजे जी॥

मैं समय का सन्त सतगुरु हूँ। आज सन्तमत की शिक्षा दे रहा कि इस संसार में दुख है। हमारे प्रधान मेरे मित्र सेठ दुर्गादास जो का चोला छूट गया। वह १९१७ से मेरे मित्र थे आज ७१ साल तक मेरी आपकी मित्रता रही। उसने बाइस हजार (२२ हजार) रुपया मन्दिर बनवाने के लिये दिया था। मेरे अपने घरेलू खर्च के लिये चालीस रुपये और मन्दिर के लिये तीस रुपये महीना देता था। अब वह मर गया। लोग कहते हैं कि अन्त समय पर गुरु ले जाता है। इसी भ्रम में आकर लोग नाम लेते हैं। ऐसा पाखण्ड, धोखा और करते हैं जिसका कोई हिसाब नहीं। मुझे पता नहीं कि वह मरा। मेरा इतना प्रेमी था कि मुझे उसके मरने का पता तक न लगा और न यह पता लगा कि वह कहाँ गया। लोग मरते समय कहते हैं कि बाबा घोड़ा पालकी या हवाई जहाज लेकर आया। यह काल तुम्हारा मन है। यह मन ही तुम्हारा रक्षक और भक्षक है। हमें ऐसा कहने वालों ने बहुत धोखा दिया है। मैं सतपुरुष हूं निर्भय होकर कहता हूँ और सच्चाई वर्णन करता हूँ जो सो सन्तों ने की है तुम लोग गुरु धारण करते हो और समझते हो कि वह तुम्हारा बेड़ा

पार कर देगा। यह बिलकुल झूठ है। तुम्हारा बेड़ा गुरु की बात को समझ कर और अमल करने से पार होना है। केवल किसी को गुरु धार कर और फिर यह यह आशा करना कि बाबे फकीर के पास आकर नाम लेलो तुम तर जाओगे और काल चक्कर से बच जाओगे, यह बिलकुल झूठ है धोखा और फरेब है। यह तुम्हारे मन भ्रम है इसलिये वह कहते हैं।

काल ने जगत अजब भरमाया, मैं क्या क्या करूँ बखान।

मैंने आपको सिद्ध कर दिया कि यह सब मन का झगड़ा है। जब तक कोई आदमी इस मन से परे नहीं जायेगा तब तक उसका जन्म मरण समाप्त नहीं होगा। मैं मन से परे नहीं जा सकता था। मैंने दाता दयाल से बहुत प्रेम किया। सोने के ताज, चाँदी के हुक्के, रेशमी कपड़े और जो कुछ मुझसे हो सका मैंने किया। पिछले सन्त इशारा करते थे कि। हमारी समझ में इशारे नहीं आते थे। मैंने सोचा जो सचाई प्रिय हैं उन्हें सचाई वर्णन कर जाऊँ। तुम्हारी इच्छा करे तो मेरे सत्संग में आया करे, न, करे मत आया करो। अगर इच्छा करे तो मेरी कोई किताब पढ़ो अगर न करे मत पढ़ो। अगर तुम मेरी शिक्षा को सच समझते हो तो चारपैसे मन्दिर को देदो वरना गोल करो। मैं अपने जीवन को नाश करके और तुम्हें धोखा देकर नहीं जाना चाहता। पिछले किये हुए आज भोगता हूँ अगर आज आपको सच्ची बात नहीं बताता और आपको गलत ढंग मे अपने पीछे लगाता हूं तो मैं दोषी हूँ। सब जगह धोखा और करते हैं कोई सच्चाई नहीं बताता। अगर कोई सच्चाई बताता भी है तो तुम लोग उसे सुनने के लिये तैयार नहीं क्योंकि तुम लोग सच्चाई के लिये नहीं जाते। मैं सच्चाई की तलाश में गया था। मैंने केवल दो वार संसारिक चीजें मांगा हैं। मैंने कभी भी दाता से यह नहीं मांगा कि मेरी उन्नति हो जाये या मेरा यह हो जावे। मैं यह देखना चाहता था कि वह मालिक का घर कौनसा है ? मैं

१९१८ में प्रातः १ बजे से सायं ५ बजे तक उनके पाँव पकड़कर रोता रहा कि जो तुम्हारा राधा स्वामी का मालिक (रज) है वह मुझे दिखाओ। वह तंग आगये होंगे। अतः मैं समझता हूँ कि मैं मूर्ख था। वह कहने लगे कल दिखाऊँगा। मेरे पास कल प्रातः आना। मैं प्रातः आ गया, कहने लगे झोलीकर मैंने झोली करदी। एक नारयल और पाँच पैसे मेरी झोली में डालकर मत्था टेक दिया। वह कहने लगे तुम में ननानवे अवगुण हैं परन्तु एक सच्चाई है। मेरा कहना मानो तुम्हें सच्चा सत्गुरु, सत्संगियों के रूप में मिलेगा जो तुम्हें उस घर का पता बतायेगा और तुम वहाँ पहुंचोगे। यह गुरुआई मुझे इसलिए दी थी कि मुझे अपने घर का पता लग जाये। अब मुझे पता लगना चाहिए कि नहीं। क्यों? मैं तो किसी के अन्तर जाता नहीं। अमेरका से पिछले कल दो तारें आई हैं। वे लोग मेरा ध्यान करते हैं और मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है उनके काम हो जाते हैं। मेरे तो बाप को पता नहीं होता स ही मैं जानता हूँ। मैंने १९४२ के बाद किसी को नाम नहीं दिया। लोग मुझे गुरु मान लेते हैं। तो फिर काल वना हुआ? दयाल क्या हुआ? तुम्हारा अपना ही मन, अपनी ही वासना, अपना ही विचार काल है। मन से परे चले जाओ वह दयाल है। इतना ही अंतर है।

संसार में सुख चाहते हो तो अपनी आश और विचार ठीक रखो तुम्हारा संसार किसी सीमा तक ठीक हो जाएगा। यह वेद मार्ग है "शिव संकल्प अस्तु'। इसलिए मैंने शिक्षा को बदला। घरों में शाँति से रहा करो। जिस घर में स्त्री पुरुष या भाई भाई का झगड़ा है वह काल है। तुम्हें कभी शान्ति नहीं मिलेगी। प्रवृति मार्ग का नियम और है और निवृत्ति मार्ग का और मैंने निवृत्ति मार्ग का नियम आपको बता दिया कि मेरी समझ में क्या आया! क्योंकि मुझे पता लग गया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। यह उनका अपना विश्वास और खेल है। अब मै कौशिश करता हूं कि मन को छोड़कर

इससे परे चला जाऊँ। मन से परे प्रकाश और शब्द है और यह शब्दयोग ही सन्तों का मार्ग है। जब तक कोई आदमी मन के चक्कर से नहीं निकलेगा वह आगे नहीं जा सकता और यही बात बाबा सांवनसिंह जी महाराज कहा करते थे दस दरवाजे लँगो ते भागे जाओ। ने दस दरवाजे क्या हैं? पाँच कर्मन्द्रियें और पाँच ज्ञानन्द्रियें। अपनी सूरत को कर्मन्द्रियों और ज्ञानइन्द्रियों से अलग करो। यह अभ्यास, नाम सुमरिन ध्यान इसी वास्ते दिया जाता है कि हम मन से आगे चले जायें। सुमरिन ध्यान करने का एक लाभ यह भी है कि सुमरिन और ध्यान करने से तुम्हारा मन बलवान हो जायेगा। जो कुछ तुम सोचोगे और चाहोगे या इच्छा करोगे वह पूरी होती रहेगी। यह भेद हैं जो मैं आप लोगों को बताना चाहता हुं।

दाता! आपने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना मुझे पता न हीं कि मैं गलत या ठीक हूँ। जो मेरे साथ व्यतीत हुआ है, वह कहता हूँ। इस संसार में सुख कहां है। जिनकी लड़कियें हैं ये हर रोज मेरे पास रोते हुये आते हैं। किसी की पाँच पाँच छः छः लड़कियें हैं लेकिन उनके पास धन नहीं। बिचारे किधर जायें। मैं उन्हें पूछता हूँ कि जब लड़कियें पैदा कीं तो क्या मुझ से पूछा था? वह खुद ही सन्तान है हम लोग कामाँग में फँसकर सन्तान पैदा करते हैं फिर दुखी होते, रोते चिल्लाते हैं और गुरुओं और डाक्टरों के पास लुटते हैं। इससे क्या लाभ? स्वामी जी कहते हैं।

काल ने जगत भजन भरमाया, मैं क्या क्या करूं बखान।

मैंने तुम्हें प्रमाण दे दिया कि काल ने जगत कैसे भरमाया? काल तुम्हारा मन है, इसे समझ नहीं और यह गलतियें खाता है और अपने कर्म का दण्ड भोगता है। तुम्हारे मन के बिचार में बड़ी भारी शक्ति है। काल कोई मामूली शब्द नहीं है। जिसने सारा संसार रचा हैं। वह तो बड़ा काल है। तुम्हारा मन बड़ा शक्ति

शाली है। मैं इसका प्रमाण देता हूँ। तुम्हें रात को स्वप्न में क्रोध आता है, तुम किसी को मुक्का मारते हो, तुम्हारा हाथ हिल जाता है और तुम डर जाते हो, बुडबुडाते हो, जबान बोलती है। दूसरे सुनने वाले भी घबरा जाते हैं। तुम नौ जवान हो, स्त्रियों का तो मुझे पता नहीं, तुम स्वप्न में एक कल्पित स्त्री बना लेते हो उससे भोग करते हो तुम्हारा वीर्य निकल जाता है। जो तुमने स्वप्न में विचार किया है वह तुम्हारे वश में नहीं। अगर कोई चाहे कि वह अपनी इच्छा से स्वप्न देखे तो यह नहीं हो सकता। जो मस्तिष्क पर संस्कार पड़े हुए हैं और फिल्म बनी हुई है वे स्वप्न में आयेंगे। जब स्वप्न का विचार तुम्हारे वश में नहीं है, उसका प्रभाव तुम्हारे शरीर पर पड़ता है तो जाग्रत में जो कुछ हम सोचते हैं उसका प्रभाव तुम्हारे पर क्यों न होगा। इसलिए बार बार कहा है, हिंदू भी कहते हैं कि शिव संकल्प अस्तु। अपने विचार ठीक रखो। घरों में प्रेम रखो। किसी से शत्रुता मत करो। आपस में प्रेम से रहो फिर उसका इलाज सन्तों ने क्या बताया है यह आगे बताता हूँ।

जो साधन थे पिछले जुग के सो कलियुग में किये प्रमाण।
जो पहले तरीके थे वे समाप्त होगये।

स्थाई सुख को पाने के लिए कोई मूर्ती पूजा करता है, मूर्ती पूजा डाक्टरों की भी है और मूर्ती पूजा गुरु की भी है। कई आदमी मेरे पास आते हैं। भई ! क्यों आये हो ? वे कहते हैं दर्शनों के लिए आए हैं। तो क्या मेरे दर्शन करने से वे सतलोक चले जायेंगे ? जिस प्रकार एक आदमी मूर्ती के पास जाता है। वह अपने विश्वास से आनन्द लेता है मगर मूर्ती पूजा से चाहे तुम मेरा ही ध्यान करते रहो तो क्या तुम मेरा ध्यान करने से आवागमन से बच जाओगे ? झूठ है धौखा और फरेब है। क्यों मैं तो किसी के अन्तर जाता नहीं। एक आदमी मेरा ध्यान करता है। मैं तो होता नहीं। वह

किसका ध्यान करता है ? वह अपने ही मनका ध्यान करता है। इस अज्ञान ने क्या किया? हजारों धर्म बन गये। कोई बाहर से नही आता और न ही कोई गुरु किसी के अन्तर जाता है, हमें धोखा दिया गया है। हम अज्ञानियों को बच्चों की तरह "कीडी का आटा गिर नया आए' झूठा सहारा दिया गया। ऐसा मैं क्यों कहता हूं ? क्योंकि मेरे सामने बहुत से गुरुओं ने माना कि हम नहीं जाते। मैं कैसे मानूँ, मेरे साथ हर दिन बीतती हैं। अमेरिका में मेरा रूप प्रकट होता है। वहां से तारें आ रही हैं।

मूरख पानी मन सैलानी।
सो अटके जल और परयान।
बुद्धिमान अभीमानी जो नर।
विद्या नारा के हुए गुलाम।
बाकी जीव बीच के जितने।
ना मूरख न अति बुद्धिमान।
जप तप ब्रत सजम बहु धोखे।
पंच अग्नि में जले निदान।

कभी मैं इन वाणियों को पढ़ा करता था तो मेरे दिल को दुख होता था। अपने पूर्वजो का कौन खण्डन सुन सकता है मगर दाता दयाल से मेरा विश्वास नहीं टूटता था तो मैं देखना चाहता था कि इसमें क्या सच्चाई है। असली मालिक कहाँ है? ये सब मन के खेल हैं और यह मन ही काल है। जब तक हम मन से नहीं निकलेगे तब तक हमारा आवागमन समाप्त नहीं होगा। मुझे क्या पता दुर्गादास कहां गया। मैं दो दिन पहले टांडे में था। जब से दुर्गादास से मेल हुआ, आज इकसठ साल हो गये कभी स्वप्न में नहीं आया। गोपालदास, भण्मूारी तुम लोग कभी स्वप्न में नहीं आये। रेलगाड़ी अवश्य आती है। मैं जगजीतसिंह के मकान पर सोया हुआ था तो साढ़े चार बजे क्या देखता हूं कि एक गाड़ी खडी है, उसमें लोग

जारहे हैं। उधर से दुर्गादास भी आया। उसने राधा स्वामी की और पूछा कि कहाँ जारहें हो? वह कहने लगा कि जयपुर जा रहा हूँ। यह क्या खेल है। मेरी बुद्धि काम नही करती। मैं इन गहमों को हल नहीं कर सकता सिवाय इसके कि यह कहूं कि यह सब मन का खेल है। वह कहाँ गया, क्या पता? मैं नहीं मानता कि वह आया होगा। क्यों नहीं मानता? जब मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो कैसे मानलूँ कि वह आया होगा। यह अपने ही मन का खेल है और कुछ नहीं। कोई कोई इस मन के खेल से बचता है।

दोखो चरित्र काल करता के।
कोई सिर कोई पैर संधान।

वह काल (Creanter of world) चरित्र बताते हैं। सन्त कहते हैं इससे निकल जाओ। कैसे निकलो? अपने आपको कर्म इन्द्रियों और ज्ञानईन्द्रयों से अलग करलो। यह साधन है। बस और कोई साधन नहीं। हम क्या साधन करते हैं? गुरु का ध्यान लगा हुआ हैं। लोग बैठे हुये हैं! उनकी कितनी संगत खडी है इतना उनका लंगर लगा हुआ है और इतना मकान बना हुआ है। अरे! ऐसी बातों से तुम्हारा बेडा पार नही होगा। हम राम का ध्यान करते हैं। उन्होंने हाथ में धनुष ली हुई है। आगे आगे राम पीछे पीछे लक्षमण है बीच में सीता है। ऐसे विचार हम अपने मन में रखते हैं। मैं स्वयं इन में फसा हुआ था। दाता दयाल के रूप से फँसा हुआ था। जिस साल में दस बारह हजार रुपये का सामान लेकर दाता दयाल के पास आर्तो करने गया था। उस समय मुझे पहला शब्द लिखा था मगर उन्होंने खोल कर नहीं बताया। इशारा किया। मैंने खोल कर कहा। जब से १९४२ से मैं बाबा सावनसिंह के चरणों में गया तो उसके बाद वह सत्संग में कहा करते थे अरे! तुम मेरी बात नहीं सुनते कोई डन्डे मारने वाला आयेगा। मैं डन्डे मारने वाला हूँ। मैंने क्रमश:

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जॉय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 926

श्री

सम्पादक— श्री सुधा मीतल

व्यवस्थापक व

श्रीमती सुधा

शिव भवन, लेखराज

अलीगढ़

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh